अध्ययन सामग्री
बी॰ ए॰ (संस्कृत) पार्ट 2
प्रश्नपत्र - चतुर्थ
डॉ॰ मालविका त्रिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
आरा (वी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰)

12.05.20

अभिज्ञान शाकुन्तलम्

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' कालिदास की काव्याभ्यास से परिपक्व बुद्धि का परिणाम है। केवल अपने ही नाटकों में नहीं समस्त संस्कृत तथा अन्य विश्व की भाषाओं में लिखे गए नाटकों में यह सर्वश्रेष्ठ है। इसकी कलात्मक गरिमा को देखकर ही आलोचकों ने इसे श्रेष्ठ नाटक ग्रन्थ की पदवी दी है।

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकः चतुष्टयम्॥

यह नाटक केवल नाट्यकला की दृष्टि से ही श्रेष्ठ नहीं है अपितु इसमें तत्कालीन भारतीय समाज की मान्यताओं और नारी के प्रति सामान्य दृष्टिकोण पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। इस नाटक में कुल सात अङ्क हैं। इसके सात अङ्कों में राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला के प्रणय, वियोग तथा पुनर्मिलन की कहानी का वर्णन किया गया है। प्रथम अङ्क में मृग का पीछा करते हुए हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त का ऋषि कण्व के आश्रम में पहुँचना, वहाँ शकुन्तला के रूप सौन्दर्य से अभिभूत होकर उसे पाने की कामना करना तथा यह जानकर कि यह क्षत्रिय कन्या है, अत्यन्त प्रसन्न होना आदि वर्णित है। द्वितीय अंक में ऋषियों के प्रार्थना करने पर दुष्यन्त का वहीं आश्रम में टिक जाना वर्णित है। तृतीय अङ्क में दुष्यन्त और शकुन्तला का गन्धर्व रीति से संगम वर्णित है।

Scanned by CamScanner

चतुर्थ अङ्क में कण्व का तीर्थाटन से लौटना तथा शकुन्तला को गर्भवती जानकर उसे शारद्वत और शार्ङ्गरव तथा गौतमी के साथ दुष्यन्त के घर भेजना वर्णित है। इस अङ्क में शकुन्तला की विदाई का प्रसङ्ग अत्यन्त मार्मिक और हृदयद्रावक है। पञ्चम अङ्क में शकुन्तला हस्तिनापुर पहुँचती है परन्तु दुर्वासा के शाप के कारण दुष्यन्त उसे नहीं पहचानता। दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दिया गया अभिज्ञान चिह्न अंगूठी भी उससे प्रभासतीर्थ में ही खोयी। कण्व के दोनों शिष्य और गौतमी शकुन्तला को दुष्यन्त के दरबार में ही छोड़कर चले आते हैं। इसी बीच कोई दिव्य ज्योति शकुन्तला को स्वर्ग उठा ले जाती है, वहाँ वह अपनी माता मेनका के साथ मारीच ऋषि के आश्रम में निवास करती है। छठे अङ्क में एक मछुए के द्वारा राजा को शकुन्तला को दी गयी अभिज्ञान की अंगूठी मिलती है। इसे देखते ही दुष्यन्त को शकुन्तला की स्मृति हो आती है। शकुन्तला के वियोग में वह विह्वल रहता है। इसी बीच इन्द्र की सहायता के लिए वह स्वर्ग यात्रा करता है। सप्तम अङ्क में दुष्यन्त स्वर्ग में राक्षसों पर विजय प्राप्त कर लौटता है। मारीच के आश्रम में वह अपने पुत्र भरत तथा प्रियतमा शकुन्तला से साक्षात्कार करता है। इसी मिलन के शुभ पर्व पर मारीच के आशीर्वाद के साथ नाटक की समाप्ति हो जाती है। इस प्रकार सात अङ्कों में निबद्ध 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की कथावस्तु नाट्यकला के सभी तत्वों से युक्त तथा परवर्ती संस्कृत नाट्य परम्परा के मूल प्रेरणा स्रोत के रूप में विद्यमान है।

Scanned by CamScanner

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के कथानक का मूल स्रोत

कालिदास के 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की कथावस्तु का मूलस्रोत 'महाभारत' के आदिपर्व का अध्याय 67 से 74 तक का अंश है। आदिपर्व में 'शकुन्तलोपाख्यान' 300 श्लोकों में वर्णित है। यह कथा साधारण रूप में होने से नीरस है। यही कथा 'पद्मपुराण' में भी महाभारत के आदिपर्व से गृहीत है। मूलस्रोत से प्राप्त सामग्री को यथासम्भव नाटकीय एवं सरस बनाने के लिए कालिदास ने उसमें बहुत से परिवर्तन किए हैं। ऐतिहासिक इतिवृत्त के निर्वाह से रसानुभव नहीं कराया जा सकता, अतः कवि को कहीं घटनाओं का संकोच और कहीं परिवर्तन और विस्तार करना होता है। किन्तु ऐसा करते समय उसे यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि मूल आख्यान का रूप एकदम तिरोहित न हो जाए।

'महाभारत' की कथा को कवि अपनी प्रतिभा एवं कल्पनाशक्ति के द्वारा सरस तथा गरिमामयी बना देता है। एक सामान्य कथानक को परिवर्तित करके कवि ने नाटकीय रूप प्रदान कर विश्ववन्द्य बनाया है। महाभारत के हीन चरित्रों को उदात्तता प्रदान कर उन्हें प्राणवन्त बना दिया है तथा उसकी निर्जीव एवं चमत्कारहीन कथा में आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर उसे सरस और रोचक बनाया है।

महाभारत में दुष्यन्त का चरित्र गिर गया है और वह अत्यन्त कामी, लोलुप और व्यभिचारी सिद्ध होता है और शकुन्तला अपने पुत्र को राजा बनाने की शर्त लगाकर एक स्वार्थी नारी के रूप में उपस्थित होती है। महाभारत में शकुन्तला दुष्यन्त से अपने जन्म की कथा स्वयं कहती है, पर शकुन्तला नाटक से यह बात शकुन्तला की दो सखियों अनुसूया एवं प्रियम्वदा - की बातचीत से ज्ञात होती है। ऐसा कर कवि ने शकुन्तला के शील एवं मुग्धत्व की रक्षा की है। महाभारत की शकुन्तला विवाह के लिए एक शर्त रखती है कि यदि उसका पुत्र राजा का उत्तराधिकारी होगा तभी वह विवाह करेगी।

Scanned by CamScanner

वह प्रगल्भ, स्पष्टवादिनी एवं निर्भीक तरुणी के रूप में उपस्थित होती है। उसमें हृदय की अपेक्षा मस्तिष्क का प्राधान्य है। शकुन्तला नाटक की शकुन्तला में उपर्युक्त दोष नहीं है। वह लज्जावती, प्रेमपरायण एवं निश्छल मुग्धा बालिका के रूप में प्रस्तुत की गई है।

कालिदास ने दुर्वासा के शाप तथा अंगूठी की बात की कल्पना कर दो महत्त्वपूर्ण नवीनताएँ जोड़ी हैं। इससे दुष्यन्त कामी, लोलुप, भीरु एवं स्वार्थी न होकर शुद्ध उदात्त चरित्र का व्यक्ति सिद्ध होता है। महाभारत में वह समाज भीरु है तथा जानबूझकर शकुन्तला को तिरस्कृत करता है, पर कालिदास ने शाप की बात कह कर उसके चरित्र का प्रक्षालन किया है। शाप के अनुसार शकुन्तला का पति द्वारा तिरस्कार आवश्यक था तथा शील स्खलन के कारण उसका अभिशप्त होना भी अनिवार्य था। इससे उसका चरित्र दण्ड प्राप्त कर उज्ज्वल हो जाता है। शाप की घटना द्वारा कवि ने शकुन्तला के दण्ड का भी विधान किया है तथा अंगूठी की बात का समावेश कर शाप-विमोचन के साधन की सृष्टि की है। राजा के पास जाने के पूर्व ही शकुन्तला की अंगूठी का गिर जाना एवं शकुन्तला के तिरस्कार के पश्चात् अंगूठी के मिलने पर राजा को उसकी स्मृति का होना, ये दोनों बातें अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से वर्णित हैं।

शकुन्तला नाटक का वस्तु-विन्यास मनोरम तथा सुगठित है। कवि ने विभिन्न प्रसंगों की योजना इस ढंग से की है जिससे की अन्त तक उसमें सामञ्जस्य बना हुआ है। इसकी विविध घटनाएँ मूल कथा के साथ सम्बद्ध हैं और उनमें स्वाभाविकता बनी हुई है। इसमें एक भी ऐसा प्रसंग या दृश्य नहीं है जो अकारण या निष्प्रयोजन हो। नाटक के आरम्भिक दृश्य का काव्यात्मक महत्त्व अधिक है। दुष्यन्त के रथ पर आरूढ़ होकर आश्रम मृग का पीछा करते हुए आश्रम में प्रवेश करना सौन्दर्य से पूर्ण है। द्वितीय अंक में प्रणय प्रतिमा शकुन्तला एवं प्रणयी राजा दुष्यन्त के मानसिक उद्वेलन का चित्रण है। चौथे अंक के विष्कम्भक में प्रातःकाल का वर्णन कर भावी दुःख एवं वियोग की सूचना दी गई है। दुर्वासा

Scanned by CamScanner

के भयङ्कर शाप जैसी महत्त्वपूर्ण घटना का सम्बन्ध इससे है जो कवि के अपूर्व नाट्य कौशल का परिचायक है।"

पद्मपुराण की कथा 'शाकुन्तल' की कथा से मिलती जुलती है। इस आधार पर विन्टरनिट्ज महोदय का कहना है कि कालिदास ने अपनी कथावस्तु 'पद्मपुराण' से ली होगी। किन्तु 'पद्मपुराण' के शकुन्तलोपाख्यान वाले अंश की रचना कालिदास के बाद की प्रतीत होती है, क्योंकि उसमें कई स्थलों पर 'शाकुन्तल' की शब्दावली ज्यों-की-त्यों उद्धृत की गयी है। अतः अनेक विद्वानों की धारणा है कि पद्मपुराण का यह प्रसंग शाकुन्तल नाटक के आधार पर रचा जाकर 'पद्मपुराण' में बाद में जोड़ दिया गया होगा। कुछ विद्वानों का मत है कि 'शाकुन्तल' पर भास के नाटकों का कुछ प्रभाव दिख पड़ता है। 'प्रतिमा' नाटक की वल्कल तथा वृक्ष सेचन की घटनाएँ, 'स्वप्नवासवदत्त' की काव्य-कल्पनाएँ और उसका तपोवन दृश्य तथा 'अविमारक' का शृंगारिक तत्त्व — ये सब 'शाकुन्तल' में बड़े हृदयग्राही रूप में एकत्र हैं। 'शाकुन्तल' के तीसरे अंक तथा 'अविमारक' के तीसरे अंक में घटनाओं और शब्दावली का जो साम्य पाया जाता है उससे भी भास का कालिदास पर प्रभाव द्योतित होता है। यह सम्भव है कि कालिदास ने भास से कतिपय भाव और घटनाएँ ली हों, किन्तु साथ ही उन्हें अपनी प्रतिभा द्वारा सर्वथा मौलिक सा बनाकर चित्रित किया है।

इन सभी तथ्यों के आधार पर 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के कथानक का स्रोत 'महाभारत' को ही माना जाता है। महाभारत की एक साधारण सी वैचित्र्य रहित कहानी से संसार के एक उत्तम नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की सृष्टि हुई।

Scanned by CamScanner